स्वच्छ भारत अभियान की सार्थकता

श्री सन्तोष कुमार उपाध्याय

सह–सम्पादक
शोध मार्तण्ड
मो0–9198108542
Email id- Santosh83.upadhyay@gmail.com

स्वच्छता अभियान हमारे देश के लिए नया नहीं है। गाँधी जी ने जिसे वर्षों पहले प्रारम्भ करके स्वच्छ भारत समृद्ध भारत का सपना देखा था उसी को साकार करने के लिए नरेन्द्र मोदी जी ने एक व्यापक मुहिम छेड़ी है। स्वच्छ एवं सुखी जीवन की कांमना तो भारत का नहीं बल्कि चराचर जगत का शाश्वत नियम है। चाहे वह व्यक्तिगत स्वच्छता हो या सार्वजनिक स्वच्छता हो हम दिनचर्या की शुरुआत इसी से करते है। प्रत्येक जीव जन्तु भी इन क्रिया कलापों का पालन करता है। लेकिन मानवता का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि वह हमेशा अपने व्यक्तिगत जीवन को तो ठीक रखना चाहता है पर वह सार्वजनिक जीवन की अनदेखी करता रहता है। क्योंकि त्वरित लाभ तो हमें व्यक्तिगत स्वच्छता से मिल सकता है परन्तु दूरगामी नहीं। आज के राजनेता सत्ता सुख के लिए क्या–क्या नहीं करते यदि नरेन्द्र मोदी अपनी संसदीय क्षेत्र काशी में झाड़ू से सफाई करते हैं तो पूरी पार्टी जगह–जगह पर झाड़ू लेकर स्वच्छता अभियान में शामिल हो जाते हैं। पत्र, पत्रिकाओं समाचार पत्रों, टी0वी0, रेडियो प्रसारण के बाद सब कुछ 'ढाक के तीन पत्ते' जैसा ही दिखाई देता है। स्वच्छ भारत समृद्ध भारत का वास्तविक मायने में क्या यही अर्थ है या फिर वास्तविकता की धरातल पर कुछ दिखाई देने वाला भी है। अभी मैं 15.07.2015 के दैनिक जागरण पृ0–09 पर छपी रिपोर्ट पढ़कर हैरान रह गया कि जिस ट्रामा सेन्टर का उद्घाटन श्री मोदी स्वयं बनारस में 16 जुलाई को करने आ रहे थे। उसकी दीवार से सटाकर हजारों टन कूड़ा–करकट रखा गया था।[1]

नब्बे के दशक से लेकर आज तक गंगा सफाई अभियान की बात हो रही है लेकिन परिणाम का आज तक कुछ अता–पता तक न लग सका। 14 अप्रैल, 2015 को मोदी जी ने गंगा की सफाई की बात की इस बिन्दु पर सरकार के द्वारा कुछ सार्थक कदम भी उठाए गए है, विशेषकर गंगा बेसिन में। प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर नकेल कसने की दिशा में इस कदम का स्वागत है लेकिन इतना पर्याप्त नहीं जितना की होना चाहिए। भारत की एक भी नदी ऐसी नही है जिसमें नाली, नालों, मिल एवं कारखानों के कचरे न बहते हों एवं मापदण्ड के अनुरूप स्वच्छ कहलाने लायक हो। यदि नदी में पर्याप्त जल प्रवाह हो तो प्रदूषण को स्वयं दूर करने की क्षमता रखती है। सुप्रीम कोर्ट में गंगा पर बन रहे बॉधों का वाद चल रहा है। दिसम्बर में पर्यावरण मंत्रालय ने कोर्ट में कहा कि जल विद्युत परियोजनाएं इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि नदी की मूल धारा अविरल बहती रहे। परन्तु फरवरी में सरकारी वकील ने सुप्रीम कोर्ट से 6 ऐसी बाँध परियोजनाओं को चालू करने का आग्रह किया जिसमें

बाँध बनाकर गंगा के बहाव को पूरी तरह रोका जाना था। गंगा पर इलाहाबाद से बक्सर के बीच मोदी सरकार ने 34 बैराज बनाने का प्रस्ताव रखा। लेकिन उ0 प्र0 व बिहार सरकार के विरोध के बाद यह स्थगित कर दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मोदी जी को गंगा के बहाव से कोई प्रेम नहीं है। जिस प्रकार मृत शरीर को अंत्येष्टि से पहले स्वच्छ किया जाता है ठीक वैसे ही मोदी जी गंगा को मृत्यु के घाट उतारकर उसकी सफाई करना चाहते है।[2]

लेकिन इसके बावजूद भी इसका यह भी मतलब नहीं लगाया जाना चाहिए कि स्वच्छ भारत अभियान की प्रासंगिकता ही नहीं है स्वच्छ भारत अभियान उन सब लोगों को दिल तक छू गया जो आज भी मजबूरी में यह देखते है कि उनके घर की महिलाओं को ऐसी मूलभूत सुविधाए अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी हैं। जब यह सब प्रारम्भ हो रहा था तब विदेशों में भारत की छवि में जबरदस्त परिवर्तन हो रहा था। प्रवासी भारतीयों को भी अब गर्व और गौरव मिल रहा है। यदि पिछले एक साल का अवलोकन किया जाय तो उनकी नीतियों में उस अन्तिम व्यक्ति को लगातार याद किया गया है जिसकी गाँधी जी सबसे अधिक चिन्ता करते थे। गाँधी जी कहते थे कि तुम्हें एक जन्तर देता हूँ जब भी तुम्हे संदेह हो या तुम्हारा अंहकार तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी अपनाओं कि जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ? तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अंह समाप्त होता जा रहा है। यदि विपक्ष भी पाँच साल तक इस टीम इण्डिया को सहयोग करे, कार्य करने दे तो भारत का भला होगा और विपक्ष की जनता में साख बढ़ेगी।[3]

राष्ट्र निर्माण में यह सभी का उत्तरदायित्व है कि अनावश्यक रूप से किसी का समय नष्ट न किया जाए। हमारे यहाँ आज भी बिल्डरों के फोन मोबाइल पर आते रहते है और उपभोक्ता के पास उनसे बचने का कोई उपाय उपलब्ध नहीं होता है। यह वे लोग है जो सबसे अधिक कमाई करते है, नेताओं और अधिकारियों को प्रसन्न करने के तरीके जानते है तथा मुम्बई और श्रीनगर में नदियों को सुखाकर वहाँ भी प्लाट बेच देते है आठ मंजिल की परमीशन लेते है और बावन मंजिल का भवन खड़ा कर देते हैं। यह लोग नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के नियमों का यदि पालन करते तो दिल्ली की हवा इतनी प्रदूषित नहीं होती। स्वच्छता अभियान तो सबसे पहले भवन निर्माण स्थलों व प्लेटफार्मों पर चलाया जाना चाहिए। स्वच्छता को लेकर गाँधी जी को अक्सर याद किया जाता है। उन्हें मिलने वालों को पहला काम अनेक बार शौचालयों का सफाई का ही मिलता था। इससे व्यक्ति के सारे व्यक्तित्व का परिमार्जन हो जाता था उनके सुझाव आज भी प्रासंगिक हैं। कोई नगरपालिका नगर की गन्दगी और भीड़–भाड़ से पार नहीं पा सकता है। यह महत्त्वपूर्ण सुधार धनी और निर्धन सभी लोगों के स्वैच्छिक सहयोग से ही सम्भव है। गाँधी जी भारत और भारत के लोगों को जितना जानते और

समझते थे उतना शायद उनके साथ के लोगों में कोई और नही समझता था। ऐसा लगता है कि उनकी भविष्य दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म तथा सटीक बैठती थी। उन्होंने तो पार्षदों से अपेक्षा की थी कि वे सफाई करने तथा सड़क बनाने जैसे कामों में मजदूरों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर काम करेंगे और इसमे हिचकेंगे नहीं। तब सामान्य जन भी स्वयं आगे आकर उनका साथ देंगे। वे लोग जो आज बड़े शहरों में मेयर या नगरपालिका के अध्यक्ष हैं, शायद यह जानकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि गाँधी जी ने ऐसा कहा था। गाँधी जी के शब्द सुनिए–''कोई व्यक्ति जो लापरवाही से यहाँ वहाँ थूककर, कूड़ा करकट फेककर या किसी अन्य रूप में जमीन को गन्दा करके वायु को दूषित करता है, वह मनुष्य और प्रकृति दोनों के प्रति पाप करता है। मनुष्य का शरीर भगवान का मन्दिर है। जो व्यक्ति इस मन्दिर में प्रवेश करने वाली वायु को दूषित करता है, वह मन्दिर को अपवित्र करता है।'' वे जानते थे और हम सब भी जानते हैं कि नदी में नहाकर अपने आप को पवित्र मानने वाले उसी नदी को गन्दा करने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। लगभग प्रतिदिन यह दृश्य यमुना के ऊपर पुलों पर देखा जा सकता है। गाड़ी खड़ी करके पढ़े लिखे संभ्रान्त दिखने वाले लोग हर प्रकार की गन्दगी नदी में फेक रहें हैं।

भारत के लोग और खासकर शहर स्वच्छता की जिस स्थिति में है। उसमें रहा नहीं जा सकता है। इसे सुधारने में लोगों को आगे लाना पड़ेगा। दूरगामी रणनीति तभी बनेगी जब नई पीढ़ी को स्वच्छता के महत्त्व को अन्तनिहित करने में अवसर दिए जाए। नगरपालिकाओं को कमर कसनी होगी। स्वयं सेवी संस्थाओं, नागारिकों और परिवारों को भी इसमे जुटाना होगा। सबसे बड़ी आवश्यकता तो दृष्टिकोण परिवर्तन करने की मुहिम चलाने की है। जनता पर प्रभाव तो अब केवल उन्हीं लोगों का पड़ता है। जिन पर लोग विश्वास करते हैं। राजनेताओं में यह संख्या लगातार कम होती जा रही है। वैसे हर शहर हर गाँव में ऐसे लोग मौजूद हैं जिन पर लोग श्रद्धा रखते हैं। उन्हें आगे आना होगा। अध्यापकों से तो अपेक्षाए सदा ही असीमित रहती हैं। वे लोगों को अपने उदाहरण से प्रेरित करने की क्षमता आज भी रखते हैं। स्वतन्त्रता दिवस पर शौचालयों की बात कर प्रधानमंत्री ने जो अलख जगाई है उसे सार्थक करने में सफलता जन भागीदारी से ही प्राप्त की जा सकेगी। स्वच्छ भारत तभी सम्भव होगा जब हर भारतीय इसमें तन, मन, धन से भाग लेगा अपना कर्तव्य मान लेगा।[4] इसके महत्त्वपूर्ण बिन्दु कालजयी कविता के रूप में निम्नलिखित हैं जिसका पहला भाग प्रस्तुत है।–

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. दैनिक जागरण समाचारपत्र दिनांक–13.07.2015, पृ0 6
2. वही सम्पादकीय 15.04.2015
3. वही सम्पादकीय 22.05.2015
4. वही सम्पादकीय 01.06.2015